Vol 3 Issue 5 June 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 5, June. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के भावी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

पुष्पेन्द्र गंगवार

शिक्षा संकाय ,शोधार्थी दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा

सारांशः

शिक्षा जीवन निर्माण की कला है। यद्यपि इसका स्वरूप यही है। इस स्वरूप में भौतिक, चिकित्सा, रसायन, वास्तुकला आदि की विविध जानकारियां भी समविष्ट है। पर इनका उद्देश्य जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं का समाधान कर जीवन का निर्माण करना ही है। जीवन निर्माण की विद्या सिखानें वाला शिक्षक। आदर्श, अनुशासित एवं प्रभावशाली शिक्षण हेतु प्रशिक्षण की अत्यन्त आवश्यकता होती है। प्राचीन काल में ऐसा विचार था कि शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती वरन् शिक्षक जन्मजात होते हैं। अमेरिकी शिक्षाशास्त्री किलपैट्रिक ने इस सन्दर्भ में कहा है कि ''प्रशिक्षण केवल शारीरिक क्रियाओं तक ही सीमित होता है। जबकि शिक्षक प्रशिक्षण में मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की क्रियायें सम्मिलित होती है''।

प्रस्तावना :

परन्तु इक्कीसवीं सदी में माध्यमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया जाने लगा। तथा ऐसा माना जानें लगा कि किसी विशेष कार्य एवं व्यवसाय में प्रभावी कार्य के लिए प्रशिक्षण आवश्यक होता है। यदि किसी व्यक्ति को कुछ दिन के प्रशिक्षण के उपरान्त किसी व्यवसाय में नियुक्त किया जाता है तो वह उस व्यवसाय के लिए योग्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत बिना किसी प्रशिक्षण के यदि किसी व्यक्ति को किसी कार्य पर नियुक्त किया जाता है तो वह एक जोखिम भरा कार्य होता है क्योंकि उसे उस व्यवसाय के कौशलों एवं यन्त्रों के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता है और जब एक व्यक्ति किसी कार्य में असफल हो जाता है तो उस कार्य के प्रति उसमें नकारात्मक अभिवृत्ति का उदय होता है और वह सोचने लगता है कि वह उस कार्य को करने में सक्षम नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रशिक्षण के उपरान्त व्यक्ति को अपने कार्य से सन्तुष्टि ही नहीं होती अपितु उसे अपने कार्य में सफलता भी मिलती है।

वस्तुतः किसी भी देश के शैक्षिक पुनर्निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है। अतः माध्यमिक शिक्षकों को प्रभावी बनानें के लिये उनके प्रशिक्षण पर विशेष दिया जाने लगा। ऐसा देखा जानें लगा कि प्रशिक्षण के उपरान्त माध्यमिक शिक्षकों नें प्रभावी ढ़ंग से शिक्षण में योगदान दिया।

समस्या की उत्पत्ति :–

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत केन्द्र एवं राज्य सरकार के द्वारा ही शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को वित्तीय सहायता प्राप्त करके भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराने का कार्य किया जाता था। यही कारण था कि आगरा मण्डल में महाविद्यालय स्तर पर भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये मात्र वित्तपोषित एवं स्वायत्तशासी संस्थाएं ही उपलब्ध थी। किन्तु वर्ष 1987 से उच्च शिक्षा को पर्याप्त संसाधनों का उचित आवण्टन न मिलने के कारण स्ववित्तपोषित संस्थाओं को बहुतायत में खोला गया है निष्कर्षतः आगरा मण्डल में आज वित्तपोषित, स्वायत्तशासी एवं स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाएं उपलब्ध है किन्तु एक ओर जहॉ स्ववित्तपोषित संस्थाओं में छात्रों की तुलना में शिक्षकों का अभाव, कार्यभार की अधिकता, शिक्षण संस्थाओं की स्थाई मान्यता, टी.ए., डी.ए., सी.पी.एफ., जी.पी.एफ., ग्रेच्युटी, पेंशन, यू.जी.सी. वेतन मान का अभाव, शिक्षकों की नियुक्ति में विश्वविद्यालय के नियमों की अवहेलना, समृद्ध पुस्तकालयों का न होना, अपूर्ण भवन, अपर्याप्त फर्नीचर, प्रयोगशाला, क्रीडांगन, प्रशिक्षण उपकरण एवं अभ्यासात्मक विद्यालयों का अभाव आदि अनेक प्रकार की समस्यायें दृष्टिगोचर होती है, वही सरकार द्वारा अनुदानित होने के कारण वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में उपयुक्त प्रकार की समस्यायें अल्प मात्र में दृष्टिगोचर होती है। इसका सीधा प्रभाव शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम पर दिखाई देता है इसके प्रतिफल के रूप में प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण न होने से भावी शिक्षकों में वांक्षित व्यक्तित्वशील विशेषताओं का विकास नहीं हो पाता।

यदि हमें स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित संस्थाओं के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणवत्ता लानी है तो उन्हें सभी प्रकार की समस्याओं से मुक्त करके अच्छा शैक्षिक एवं सांस्कृतिक वातावरण तैयार करना होगा तथा इन संस्थाओं को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बढ़ते तकनीकी विकास के अनुरूप पाठन बिन्दुओं में परिवर्तन करना होगा। तभी वह भावी शिक्षक की भूमिका का निर्वाह कर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव से अपने अन्दर व्यक्तित्वशील विशेषताओं को विकसित करने में सक्षम होगा।

यही कारण है कि शोधकर्ता के मन में यह जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा जाग्रत हुई कि हमारे वर्तमान माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति एवं दायित्वबोध पर क्या प्रभाव पड़ता है?वस्तुतः राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में इस मूलभूत समस्यात्मक प्रश्न को उठाकर इस पर वस्तुनिष्ठ शोधकार्य की आवश्यकता स्पष्ट स्वीकार की गई। इससे शोधकर्ता को अपना प्रयास सार्थक, समायोचित एवं औचित्यपूर्ण लगा।

Title : *माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के भावी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *पुष्पेन्द्र गंगवार* **yr:2013 vol:3 iss:5**

1.अध्ययन के उद्देश्य :–

अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

1.वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
2.स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
3.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करना।
4.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्गों के क्रम में अध्ययन करना।
5.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का लिंग के क्रम में अध्ययन करना।

2.अध्ययन की उपकल्पनाएं :–

इस शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निम्नांकित परिकल्पनाएं निरूपित की गईं हैं तथा इन्हीं की जांच तथा सत्यापन करके तथ्य संकलन तथा प्राप्तांकों की संगणना करने की योजना कार्यान्वित की गई है –

1.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता में शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अन्तर होगा।
2.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्गों के क्रम (कला, वाणिज्य एवं विज्ञान) में अन्तर होगा।
3.वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का लिंग के क्रम में अन्तर होगा।

3.अध्ययन की परिसीमाएं :– प्रस्तुत शोध की निम्नांकित परिसीमाएं निर्धारित की गई हैं।

1.प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा राजकीय संस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं डीम्ड विश्वविद्यालयों के शिक्षा संकाय के शिक्षणशील व्यक्तित्वों को सम्मिलित न करके मात्र वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित संस्थाओं के छात्रों को सम्मिलित किया गया है। अतः यह अध्ययन वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के छात्रों तक ही सीमित है।
2.प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षणरत छात्रों की शिक्षण अभिवृत्ति, का अध्ययन किया गया है। अतः यह अध्ययन छात्राध्यापक वर्ग की इन दो विशेषताओं तक ही सीमित है।
3.प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षणरत पुरूष एवं महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का ही अध्ययन किया गया है।
4.प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रशिक्षणरत छात्राध्यापको को कला, वाणिज्य एवं विज्ञान आदि वर्गो के परिप्रेक्ष्य में सम्मिलित किया गया है। अतः यह अध्ययन उक्त तीन वर्गों तक ही सीमित है।
5.प्रस्तुत अध्ययन न्यादर्श मे चयनित लगभग 160 माध्यमिक प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित है।

4.अध्ययन की विधि :–

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखकर वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शिक्षा सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का महत्वपूर्ण स्थान है, इसका प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है।

न्यादर्श का चयन :–

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या अधिक होने के कारण (ंदकवउ) यादृच्छिक विधि का प्रयोग करना सम्भव नहीं हो या रहा है। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये छवद ंदकवउ ैउचसपदह का एक प्रकार च्नतचवेपअम ैउचसपदह का प्रयोग किया जायेगा। तदपुरान्त शोधकर्ता च्नतचवेपअम ैउचसपदह द्वारा 3 वित्त पोषित एवं 4 एवं वित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का चयन करेगा। चयनित 3 वित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राध्यापकों की संख्या लगभग 300 होगी तथा 4 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्राध्यापकों की संख्या लगभग 400 है। शोधकर्ता चयनित छात्राध्यापकों में से संस्थाओं के क्रम में मात्र 25 प्रतिशत छात्राध्यापकों को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। जिन्हें निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या :– 1

क्रम संख्या	संस्थाओं के रूप	चयनित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या	छात्राध्यापकों की संख्या	न्यादर्श में सम्मिलित छात्राध्यापकों की संख्या (25 प्रतिशत)
1	वित्त पोषित	3	300	75
2	स्ववित्त पोषित	4	400	100
	कुल योग	**7**	**700**	**175**

उपरोक्त तालिका में चयनित 175 प्रशिक्षणार्थी ही हमारा न्यादर्श है।

5.अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधार्थी द्वारा अध्ययन हेतु निम्नांकित तीन उपकरणों का चयन किया गया है। जिनका संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है–

1.शिक्षण प्रभावशीलता मापनी द्वारा डॉ. बी.के. पासी।
2.शिक्षण अभिवृत्ति मापनी द्वारा डॉ. एस. पी. अहलूवालिया।
3.दायित्वबोध मापनी द्वारा डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी, डॉ. कल्पलता पाण्डेय।

7.अध्ययन के निष्कर्ष :–

वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

प्रस्तुत उपकल्पना के विश्लेषण हेतु उच्च, औसत एवं निम्न शिक्षण अभिवृत्ति से युक्त प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता को ज्ञात करने के लिए उनका मध्यमान, मानक विचलन, टी अनुपात निकाला गया जिन्हें निम्नांकित तालिका द्वारा दर्शाया गया है –

तालिका संख्या :– 2

िक्षण अभिवृत्ति से युक्त वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता की सार्थकता

शिक्षण अभिवृत्ति के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के समूह	संस्थाओं के प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च षिक्षण अभिवृत्ति से युक्त प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	101.95	17.16	2.628	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	87.55	19.43		
औसत षिक्षण अभिवृत्ति से युक्त प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	105.34	15.86	9.277	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	70.93	17.37		
निम्न षिक्षण अभिवृत्ति से युक्त प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	99.8	17.63	5.089	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	69.25	22.62		

तालिका में प्रदर्शित परिणामों का गहनतापूर्वक अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की उच्च, औसत, निम्न शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान, स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की उच्च, औसत, निम्न शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान से अधिक प्राप्त हुए हैं। परन्तु तालिका में प्रदर्शित टी मान का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि प्राप्त टी का मान उच्च के लिए मुक्तांश 45 पर सारणी सार्थकता स्तर .05 पर तालिका मूल्य 2.02 से अधिक है, औसत के लिए मुक्तांश 80 पर सारणी सार्थकता स्तर .05 पर तालिका मूल्य 1.99 से अधिक है एवं निम्न के लिए मुक्तांश 45 पर सारणी सार्थकता स्तर . 05 पर तालिका मूल्य 2.02 से अधिक है अर्थात सार्थक अन्तर है। स्ववित्त संस्थाओं की तुलना में वित्तपोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति अधिक मात्रा में सकारात्मक द्रष्टिगत हुई है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का वर्गों के क्रम में अध्ययन करना। समाधान :–

प्रस्तुत उपकल्पना के विश्लेषण हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान के प्राप्तांकों को लिया गया है। इसके पश्चात वर्गों के क्रम में प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता को ज्ञात करने के लिए उनका मध्यमान, मानक विचलन, टी अनुपात निकाला गया जिन्हें निम्नांकित तालिका द्वारा दर्शाया गया है–

तालिका संख्या :– 3

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत कला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता की सार्थकता

वर्ग के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के समूह	संस्थाओं के प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर .05
कला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	103.9	16.57	5.907	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	78.05	22.2		
वाणिज्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	96	14	3.997	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	75.43	18.09		
विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	106.9	17.69	6.952	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	70.97	20.47		

परिकल्पना के परीक्षण के सन्दर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण की उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग के मध्यमान, स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के कला, वाणिज्य एवं विज्ञान वर्ग के मध्यमान से अधिक प्राप्त हुए हैं तथा तालिका में प्रदर्शित टी मान का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि प्राप्त टी का मान वर्गो के क्रम में क्रमशः 77 स्वतंत्रता अंश पर 1.99, 37 स्वतंत्रता अंश पर 2.02 तथा 55 स्वतंत्रता अंश पर 2.00 है, जो कि .05 स्तर के तालिका मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर है। स्ववित्त संस्थाओं की तुलना में वित्तपोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता वर्गों के क्रम में अधिक मात्रा में सकारात्मक द्रष्टिगत हुई है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का लिंग के क्रम में अध्ययन करना।

समाधान :

प्रस्तुत उपकल्पना के विश्लेषण हेतु वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के प्राप्तांकों को लिंग के क्रम में लिया गया है। इसके पश्चात लिंग के क्रम में प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता को ज्ञात करने के लिए उनका मध्यमान, मानक विचलन, टी अनुपात निकाला गया जिन्हें निम्नांकित तालिका द्वारा दर्शाया गया है–

तालिका संख्या :–4

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत पुरूष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता की सार्थकता

लिंग के आधार पर प्रशिक्षणार्थियों के समूह	संस्थाओं के प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	सार्थकता स्तर ण्05
पुरूष प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	106.2	19.05	6.527	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	70.51	21.18		
महिला प्रशिक्षणार्थियों का समूह	वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	101.86	15.77	7.093	>.05
	स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्था	78.07	20.05		

परिकल्पना के परीक्षण के सन्दर्भ में प्रदत्तों के विश्लेषण की उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के पुरूष एवं महिला वर्ग के मध्यमान, स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों के पुरूष एवं महिला वर्ग के मध्यमान से अधिक प्राप्त हुए हैं तथा तालिका में प्रदर्शित टी मान का अवलोकन करने

पर स्पष्ट होता है कि प्राप्त टी का मान लिंग के क्रम में क्रमशः 58 स्वतंत्रता अंश पर 2.00, 133 स्वतंत्रता अंश पर 1.98 है, जो कि .05 स्तर के तालिका मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर है। स्ववित्त संस्थाओं की तुलना में वित्तपोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता लिंग के क्रम में अधिक मात्रा में सकारात्मक द्रष्टिगत हुई है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

8.अध्ययन के निष्कर्षों का विवेचन :–

शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है।

विवेचना –

शिक्षण अभिवृत्ति के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है। इसका तात्पर्य यह है कि उच्च, औसत, निम्न शिक्षण अभिवृत्ति से युक्त वित्त पोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थी, स्ववित्त पोषित संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। इसका कारण वित्त पोषित संस्थाओं में प्रशिक्षणार्थियों को कक्षाकक्ष शिक्षण, छात्र केन्द्रित अभ्यास, शैक्षिक प्रक्रिया में अधिक सुविधाएं, उच्च शिक्षित शिक्षक, उपस्थिति की अनिवार्यता से छात्रों की सक्रिय भागीदारी एवं उच्च मेरिट वाले छात्रों का प्रवेश, भावी शिक्षकों को समय–समय पर संगोष्ठी, कार्यशाला आदि में सहभागिता होने से उनकी शिक्षण अभिवृत्ति सकारात्मक हो जाती है इसके विपरीत स्ववित्त पोषित संस्थाओं में प्रशिक्षित एवं कुशल अध्यापकों का अभाव, संस्थाओं के द्वारा उपस्थिति के स्थान पर धन को महत्व देना, भौतिक सुविधायें अच्छी होने पर भी शैक्षिक वातावरण की कमी भावी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति नकारात्मक हो जाती है।

विभिन्न वर्गो के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है।

विवेचना –

विभिन्न वर्गो के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है। इसका तात्पर्य यह है कि वित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् विभिन्न वर्गो के प्रशिक्षणार्थी, स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् विभिन्न वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। इसका प्रमुख कारण वित्त पोषित संस्थाओं में स्ववित्त पोषित संस्थाओं की अपेक्षा अधिक प्रतिभावान छात्रों का अध्ययन करना, अधिक योग्यता वाले शिक्षक, शिक्षकों में कार्य संतुष्टि, समृद्ध पुस्तकालय, उच्च शैक्षिक वातावरण आदि है।

लिंग के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है।

विवेचना –

लिंग के परिप्रेक्ष्य में वित्त पोषित एवं स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सार्थक अन्तर है। इसका तात्पर्य यह है कि वित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् पुरूष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षणार्थी, स्ववित्त पोषित संस्थाओं में अध्ययनरत् पुरूष एवं महिला वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। इसका प्रमुख कारण वित्त पोषित संस्थाओं में स्ववित्त पोषित संस्थाओं की अपेक्षा अधिक प्रतिभावान छात्रों का अध्ययन, करना आदि है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.Best, J. W. & Khan. J. V.(2002): "Research in Education", Delhi Prentice Hall Of India Pvt. Ltd..
2.Buch, M. B. (1988-92): "Fifth Survey of Research in Education", New Delhi NCERT.
3.Buch, M. B. (1988-92): "Sixth Survey of Research in Education", New Delhi NCERT.
4.दीक्षित, हरितिमा,: ''मानसिक स्वास्थ्य एवं विद्यालयी प्रबन्ध का माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के कृत्य संन्तोष पर प्रभाव'', यूनिवर्सिटी न्यूज, पृ0 सं0 30।
5.दत्ता, विभा,: ''अध्यापक प्रभावशीलता एवं संलग्नता अभिवृद्धि'', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, निराला नगर लखनऊ, पृ. सं. 28।
6.Desai, K. G. (1998): "Evaluuation of Student Teaching", Published in Booklet, New Delhi (D.T.E.) NCERT.
7.Garrett, H. E. (1998): "Statistics in Psychology And Education", Bombay, Vikils Fear & Simons Ltd..
8.Kaul, Lokesh. (2002): "Methodology of Educational Research", New Delhi Vikas Publishing House.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net